शोध का निष्कर्ष

"नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता" विषय पर शोध करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जीवनीपरक उपन्यास में सभी पात्र वास्तविक होते हैं। उनमें कल्पनिकता का समावेश नहीं किया जा सकता। स्वयं लेखक नरेंद्र कोहली की मान्यता है कि 'जो कुछ व्यक्ति के जीवन में घटा है उनमें से कुछ काट लेना कोई ठीक विचार नहीं है। जब किसी ऐतिहासिक व्यक्ति के जीवन को आधार बनाकर उपन्यास लिखा जाता है तब उसे ऐतिहासिक जीवनी जीवनीपरक उपन्यास कहते हैं। ठीक इसी प्रकार जब किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के जीवन को आधार बनाकर उपन्यास लिखा जाता है। तब उसे आध्यात्मिक जीवनीपरक उपन्यास कहते हैं। जैसे गाँधीजी के जीवन पर आधारित 'पहला गिरमिटिया' एवं डॉक्टर कृष्णबिहारी द्वारा लिखित 'कल्पतरु की उत्सव लीला। आध्यात्मिक जीवनीपरक उपन्यास में साधकों के ईश्वरीय स्वरूप के बारे में जाना जा सकता है। ऐसा इसलिए हैं कि जब किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के जीवन पर उपन्यास लिखते समय उस व्यक्ति की आध्यात्मिकता को नकारा नहीं जा सकता। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के कर्म के फलस्वरूप किसी मनुष्य का जीवन, किसी स्थान आदि को प्रभावित करता है तब उस व्यक्ति के जीवन पर आधारित उपन्यास में उस समय का ऐतिहासिक स्वरूप उभरकर आता है।

शोध-प्रबंध में नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का विश्लेषण करते हुए यह ज्ञात हुआ वे पौराणिक विषयों एवं आधुनिक विषयों को लेकर उपन्यासों का सृजन करते हैं।

भारतीय दर्शन का मूल अध्यात्म दर्शन है। तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के पात्र स्वामी विवेकानंद का दर्शन अद्वैतवाद है। भारतीय दर्शन में उनका चिंतन सार्वोभौमिक स्तर की है। उपन्यास को पढ़ते हुए यह ज्ञात होता है कि अमेरिका के शिकागो में उन्होंने जो अपना परिचय दिया था वह उनका निजी परिचय नहीं था बल्कि सम्पूर्ण भारतवासियों का परिचय था। वेदों में जो साथ-साथ बोलने एवं साथ-साथ चलने की परम्परा है। उसी को उन्होंने अमेरिका की धरती में स्थापित करने का प्रयास किया। कहा जाता है कि स्वामीजी मायावाद से मुक्ति की बात करते थे। इस बात को यदि शोध के दृष्टिकोण से देखा जाए तो माया एक कारा है। इसे तोड़कर ही व्यक्ति मायाधीश के श्री चरणों में समाहित हो सकता

है। भारतीय दर्शन में मनुष्य का वास्तविक स्वरूप आत्मा है। अतः यह कहा जा सकता है कि आत्मा को जानना ही वास्तविक जीवन दर्शन है।जीवनीपरक उपन्यास में कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया जाता है जैसे वर्णात्मक शैली, संवादतमक शैली आदि। कई उपन्यासों में अध्यायीकरण का भी सहारा लिया जाता है जैसे लेखक रांगेय राघव ने 'यशोधरा जीत गई' नामक उपन्यास को तीन अध्यायों में विभाजित किया है। कभी-कभी लेखक जिस प्राप्त का होता है वहाँ के शब्दों का प्रयोग उपन्यासों में होता है। उदाहरण के लिए उन्होंने इस उपन्यास में भोजपुरी भाषा का प्रयोग किया है। आध्यात्मिकता और साधना पक्ष का अध्यन करते हुए यह ज्ञात हुआ कि स्वामी विवेकानंद के चरित्र में आध्यात्मिकता का बीज बचपन से ही निर्मित हो चुका था। तभी वे अपनी माँ से कहते हैं कि उनकी माँ को भगवत दर्शन की अभिलाषा से भगवान को पुकारना चाहिए था पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से नहीं। यह विवेकानंद की आध्यात्मिकता का ही परिणाम था कि ठाकुर ने उन्हें ज्योति दर्शन के विषय में पूछा था। समकालीन परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार के दुष्टों की संख्या स्वामी के ज़माने में रही है। वैसे आज भी हैं। ठीक इसी प्रकार उस समय में जैसे सज्जन लोग थे वैसे आज भी हैं। दुष्ट लोगों की संगति में जीवन दर्शन का विकास नहीं होगा। जबकि सद लोगों के व्यक्तित्व में जीवन दर्शन का विकास होगा। तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के पात्र विवेकानंद के व्यक्तित्व के विषय में यह कहा जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है। वे गायक भी हैं, अभिनेता भी हैं, वादक भी हैं। शोध के उपरांत यह ज्ञात हुआ कि तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास का मूल यह है कि व्यक्ति को समस्त प्रकार के कारागारों भय, क्रोध, लोभ, भाषा, जाति आदि को तोड़ देना चाहिए। विवेकानंद एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभरकर आते हैं जो मानव जीवन में निहित समस्त प्रकार के कारागार को तोड़ देते हैं। जहाँ तक शिल्प की बात है तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास में नाट्य शिल्प का प्रयोग देखने को मिलता है। व्यक्ति निर्माण का विश्लेषण करते हुए यह बात उभरकर सामने आई कि व्यक्ति निर्माण व्यक्ति के चरित्र का निर्माण है । चरित्र महत्वपूर्ण वस्तु है। चरित्रिक शुद्धता के बिना व्यक्ति निर्माण नहीं किया जा सकता। लेखक के अनुसार 'मिथ्यावादी व्यक्ति चरित्रवान नहीं हो सकता। व्यक्ति निर्माण का अर्थ है जाति, धर्म, भाषा, स्त्री-पुरुष आदि के आधार पर भेद न करते हुए सभी को विकसित

करना। यदि व्यक्ति को अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं धर्म की भाषा की जानकारी नहीं है तो वह न तो व्यक्ति निर्माण कर सकता है, न समाज निर्माण कर सकता है और न ही राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। व्यक्ति को केवल अपनी भाषा की जानकारी नहीं होनी चाहिए बल्कि संस्कृति की भी जानकारी होनी चाहिए। विवेकानंद के ज़माने में ऐसे अनेक लोग थे जिन्हें अपनी मातृभाषा, धर्म की भाषा आदि की जानकारी ही नहीं है। उपन्यास का पात्र 'हृदय' ऐसा ही व्यक्ति है जो भले ही ईसाई धर्म से जुड़ा हुआ है किंतु उसे ईसा की मातृभाषा अंग्रेज़ी नहीं बल्कि यूनानी थी। ईसाई धर्म की भाषा यूनानी है। ऐसे लोगों के द्वारा किसी धर्म के आधार पर राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति का निर्माण नहीं हो सकता। राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के निर्माण में शिक्षा की भी भूमिका है। स्वामी के ज़माने में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। परिणाम स्वरूप वे अपने अधिकारों के विषय में जान ही नहीं पाती थीं। कभी-कभी उन्हें ससुराल में अत्याचारों का सामना भी करना पड़ता था। यह स्थिति कुछ हद तक आज भी देखने को मिलती है। उपन्यास की पात्र स्वामी विवेकानंद की बहन योगेन्द्रबाला ऐसे ही नारियों का प्रतिनिधित्व करती हुई दिखाई देती है। स्वामी विवेकानंद नारी की इस दशा को देखकर एक समाज सुधारक के रूप में उभरकर आते हैं। ऐसी बात नहीं है कि स्वामी विवेकानंद में केवल सकरात्मक गुण ही थे बल्कि नकरात्मक गुण भी थे क्योंकि वे भी एक मनुष्य ही थे। तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास में वर्णन आता है कि उनके मन में यह विचार आता है कि वे सन्यासी है। अतः उन्हें गायिकाओं एवं गणिकाओं का भजन नहीं सुनना चाहिए क्योंकि अद्वैत के जानकार हैं। अब बात यहाँ यह आती है कि यदि आप इतने बड़े सन्यासी हैं तो नारी और पुरुष में भेद क्यों कर रहे हैं। एक बार जब शुरू में ठाकुर से मिलने गए थे तो उनके मन में विचार आता है कि जिस ठाकुर से मिलने के लिए जा रहे हैं उसे अंग्रेज़ी नहीं आती, पाश्चात्य दर्शन की जानकारी है। जीवन दर्शन का अर्थ किसी व्यक्ति के जीवन को गहराई से अवलोकन करना। शोध के दौरान स्वामीजी के जीवन का अवलोकन करते हुए मैंने यह पाया कि स्वामीजी के भीतर सकरात्मक और नकरात्मक दोनों ही गुण विद्यमान थे। शोध-प्रबंध के समस्त अध्यायों का अध्यन करते हुए यह कहा जा सकता है कि तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास में एक ऐसे जीवन दर्शन की बात की

गई है जो व्यक्ति के लिए, राष्ट्र के लिए, समाज के लिए, विश्व के लिए, आध्यात्मिक जीवन के लिए समकालीन समय में भी प्रासंगिक है।

चार महत्वपूर्ण नवीन बिंदु इस शोध में उभरकर आए हैं

1) मेरी दृष्टि में लेखक नरेंद्र कोहलीजी केवल पौराणिक रचनाकार नहीं हैं। उन्हें यदि केवल पौराणिक रचनाकार मान लिया जाए तो उनके समग्र साहित्य का मूल्यांकन नहीं होगा क्योंकि ऐसा करने से उनके साहित्यिक संसार का वह पक्ष जो उन्होंने विविध आधुनिक विषयों को आधार बनाकर लिखा है उसका मूल्यांकन नहीं हो पाएगा। उदाहरण के लिए उनके प्रेमकथापरक उपन्यास प्रीति-कथा, सागर-मंथन जो नाम से भले ही पौराणिक प्रतीत होता हो लेकिन यह बिलकुल भी पौराणिक नहीं है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि विदेश के लोग भारत की संस्कृति को अपना रहे हैं। परंतु भारत के लोग अपनी संस्कृति से दूर चले जा रहे आदि उपन्यासों का मूल्यांकन नहीं हो पाएगा। नरेंद्र कोहली कहानीकार भी हैं किंतु उनकी कहानियाँ पौराणिक नहीं हैं। उनकी आरम्भिक कहानियों की सामग्रियों को उन्होंने अपने पारिवारिक जीवन से ग्रहण किया। यह कहना उचित होगा कि वे एक विविध विषयी रचनाकार हैं।
2) मानव जीवन के समस्त प्रकार के कारागार को तोड़ते हुए एक उन्मुक्त मानव जीवन की बात कहीं गई है।
3) तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास में दो भोध है एक विश्वबोध एवं दूसरा भारतीय बोध उपन्यास के पात्र स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि वे जितने विश्व के हैं उतने ही भारत के भी है।
4) तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के पात्र स्वामी विवेकानंद पुराण पुरुष भी हैं और ऐतिहासिक पुरुष भी है। इस उपन्यास के पात्र विवेकानंद उसी रूप में ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं। जैसे पुराणों में मुनि-ऋषि ईश्वर को प्राप्त करते थे। लेखक की मान्यता है कि विवेकानंद का चरित्र पुराण-पुरुष के समान है।